सम्पादकों के खेद पत्रों से निराश लेखक / लेखिकाएँ

अपनी पांडुलिपियों के साथ

व

एक ही लेखक की समग्र कृतियों के एक ही स्थान से

शोधकर्त्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान मे रखते हुए

आकर्षक रूप-सज्जा सुन्दर मुद्रण

बढ़िया कागज व पक्की जिल्द सहित प्रकाशन के लिए

हमारे निम्न कार्यालयों से सम्पर्क करें :—

सोते-जागते

निरंकार नारायन सक्सेना



शिवा स्वाति प्रकाशन
एफ 12 डी गुरुतेग बहादुर ऐन्कलेव
दिल्ली-110093

Sotey-Jagtey (Poems)

by

Nirankar Narain Saxena

मूल्य : 48.00 रुपये

ISBN : 81-85207-03-X

प्रथम संस्करण : 1992
आवरण : हरि प्रकाश त्यागी

प्रकाशक / वितरक
शिवा स्वाति प्रकाशन, एफ-12 डी० गुरु तेग़बहादुर एन्क्लेव
दिल्ली-93
टेलीफ़ोन : 2280993

मुद्रक : शान प्रिंटर्स, शाही मोहल्ला, बाबरपुर रोड
शाहदरा, दिल्ली-32

मां
कब चली गईं
पता नहीं
पिता
जो अक्सर याद आते हैं
भाई
जो
मेरी कटुताओं
और लक्षणों को
सहन नहीं कर सका
और
चला गया

—उन सब छोड़ के जाने वाले
इष्ट-मित्रों और सम्बन्धियों
को

समर्पित है यह पुस्तक

लेखक के उपन्यास 'जुड़े बिखरे सम्बन्ध' व अन्य कृतियाँ 'बिना सीढ़ियों के मकान' 'भागती पीढ़ियाँ' (कहानी संग्रह) 'महाक्रांति' (नाटक संग्रह) और अंगरेजी उपन्यास 'Ties Thick & Thin' पर प्राप्त कुछ प्रकाशित व लिखित सम्मतियाँ

(1)···अजय (उपन्यास का नायक) एक आदर्शवादी मध्यवर्गी युवा है···
'समीक्षा'

(2)···कथानायक अजय के संघर्ष की यह लम्बी कहानी अपने अन्तिम पड़ाव में पहुँचकर नायिका हेम को स्वाभिमानी आधुनिका के रूप में उभारती है···
'आजकल'

(3)···उपन्यास के सभी चरित्र जीवन्त हैं, विशेषकर अजय, हेम, और ऋतु ···लेखक ने ऋतु के रूप में हिन्दी कथा-जगत को एक नया चरित्र दिया है ··
'योजना'

(4)···सांसारिक उपलब्धियों से परे कुछ करने की आकांक्षा, परन्तु न कर पाने की मजबूरी उपन्यास का मूल बिन्दु है··· 'दैनिक हिन्दुस्तान'

(5)···खूबसूरत शीर्षक देकर एक लम्बी कहानी लिखी है···
'नवभारत टाइम्स'

(6)···ढोंगी साधुओं, व्यक्तिपरक वैदेशिक संस्कृति और अन्धविश्वासों पर भी कहीं-कहीं व्यंग्य हैं। परिश्रम प्रोत्साहनीय है। इस उपन्यास का नाम 'दिशा-बोध' होता तो अच्छा रहता। हेम की त्याग-भावना ऐसी है। 'स्रोतस्विनी'

(7) उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन के कुछ बहुत मार्मिक दृश्य उभरे हैं।
'निकेत'

'''आपका उपन्यास पढ़ गया हूँ। आपकी प्रथम कृति का स्वागत करता हूँ। निश्चय ही और भी सशक्त कृतियाँ दे सकेंगे''' 'विष्णुप्रभाकर'

'जुड़े-बिखरे सम्बन्ध' आज के समाज के चित्रण में पूर्णतः सफल हुआ है। स्वतन्त्रता के बाद के पारिवारिक जीवन का यथातथ्य अंकन करके आपने वस्तुतः प्रशंसनीय कार्य किया है। क्षेमचन्द्र 'सुमन'

भाषा की रवानगी और व्यंग्य का पुट है जिसके कारण 'बिना सीढ़ियों के मकान' संग्रह की कहानी राजधानी की एक शाम सामान्य से बेहतर यानी एक अच्छी कहानी बन गई है। 'डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना'

'महाक्रांति' में सम्मिलित नाटकों से नाटककार की अनुभवशीलता और उनके कृतित्व की परिपक्वता झलकती है। जहाँ एक पात्रीय नाटिका 'मेरा सवाल' में एक शराबी की मनोवैज्ञानिक उथल-पुथल के जरिये हालात की करवटों और अपने-परायों की बेचहरगी पर भरपूर व्यंग्य किया गया है। वहाँ 'बेईमान' में नजदीकी रिश्ते-नातों की ओट में पनपते स्वार्थ तथा घृणा की पुरानी कथा-वस्तु के बावजूद पति-पत्नी के मार्मिक सम्बन्धों की अटूटता का चित्रण, निजी जरूरतों के सन्दर्भ में भी बड़ी कुशलता से किया गया है। 'महाक्रांति' एक प्रतीकात्मक शैली का नाटक है'''यह नाटक जितना अद्‌भुत है उतना ही यथार्थ की मार्मिक गाथा भी है। 'आजकल में प्रकाशित समीक्षा से'

छोटी-बड़ी, कुल सत्रह कहानियों का यह संग्रह लेखक के नाना प्रकार के अनुभवों पर आधारित सुलझी हुई सृजनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आया है। एक उल्लेखनीय उपन्यास के बाद उसकी यह कृति भी इतनी ही पठनीय है क्योंकि कहानी की कठिन विधा में सक्सेना का प्रयास कहानी की गहराई में वह बात उजागर कर लेता है जो कहानी की लम्बाई के बगैर सम्भव नहीं थी। देखे-अनदेखे तथ्यों का संयोग उसकी कहानियों में रंगों के खून की भाँति प्रवाहित रहती है गोया यथार्थ पर से कल्पना और कल्पना पर से यथार्थ रंग अलग नहीं किया जा सकता।

'खाली खूँटा' एक बड़ी कामयाब कहानी है जिसमें प्रारब्ध की कठोरता को मानसिक तथा शारीरिक आवश्यकताओं के आगे झुककर, यथार्थ की कल्पना का स्वाग ही कहानी की रोचकता का मूल आधार है। 'त्रिशूल', 'हवस', 'प्लेटोनिक

लव' की उल्लेखनीय गाथाएँ हैं। 'मकान' और 'सहज' यथार्थ की मुंह-बोलती रचनाएँ है और सहज स्वाभाविक मनःस्थिति के झिलमिलाते दर्पणों-सी लगती हैं। सक्सेना का शिल्प खासकर नारी के व्यक्तित्व और चरित्र-चित्रण में आगे-आगे है और पुरुष के बारे मे उसका वर्णन एक समतल-स्तर की तरह है जहां नारी का व्यक्तित्व ठीक से उभरने और स्थित रहने की सम्भावनाओं से सदैव दो चार रहता है।

आशा है यह कहानियां सभी हाथो स्वीकार की जाएँगी क्योंकि इनकी रोचकता मे सन्देह की गुंजायश कम है।

राजदुलारी
नई दिल्ली
'आजकल से'

लेखक की शीघ्र प्रकाश्य अन्य कृतियां :

- एक दफ्तर (उपन्यास)
- बंटवारे की कहानी (पद्यमय)
- कोई नहीं समझा [नाटक]
- Generations On the Run
- Poems By Day & Night

Readers from clifferent Countries Speak for the Novel 'Ties Thick & Thin'

...I enjoyed the story very much—it was impossible to guess what was going to happen and so kept its interest right upto the end. The characters were well developed. ...The ideas which you have put into the mouths of the characters and the text are very interesting comments about philosophy and contemporary social problems.

—Andrew & Aun Noel Clark
Secretary General
Quaker Peace & Service "Chipko"
Parslows Hillock, London.

I think it gives a picture of real India and a real Indian family, which your books do. Also I was interested in the philosophical" discussions and admired that fine youngman, Ajay.

Mrs. Woodward Rich
U.S.A.

Let me say that I did enjoy your book. It does make it easier to understand your people whom I admire very much !

Mary Ellen Carroll
New York

It gives an insight into Indian life which is very different than life in New York. However, when I finished the book I did feel that in a big way.

—Eunice Stern
23, Cannon Rd., Chestnut Ridge, New York-10952

I have to say that I like it. Every page of it, brought a big of the 'Indian way of life' back to my mind... I've been but 10 weeks in your country, but I feel that a real Indian in any similar situation would act more or less as Ajay does.

···It's not easy to compile my feelings about the Novel in a single line... Simply 'fine' or 'very accurate would be to brief'...

—Patrick Luginbuhi
Switzerland

Your novel helped me to understand India.

—Hisae Kuroda
Yokohama, Japan

The best guides of mine are my memory and your book. I read it with great interest

LENZA
MOSCOW

I've read your book with great interest and also some of my students have read and liked it.

—Gabriel und Hans Michael Strauberg
Alemannenweg 18,
7813, Staufen (West Germany)

मेरी बात

प्रात, दिवस, शाम या रात—किस समय अमुक रचना की सृष्टि हुई है कदाचित यह बता सकना अब कठिन होगा, और उससे भी कठिन, शायद यह बात बता सकनी है कि इन रचनाओं को गद्य अथवा पद्य, किस श्रेणी मे, रखा जाए।

आज कविता के मानदण्ड, पुराने मानदण्डो से कही मेल नहीं खाते है और कविता में भी इतने प्रकारो ने जन्म ले लिया है कि मैं अपनी रचनाओ को किन से जोड़ू, यह सकट उतना ही गहन है जितना अपनी सभी रचनाओ को गद्य या पद्य की श्रेणी मे डालना।

मैं 'सोते-जागते' की रचनाओ को —जागृति की ओर ले जाने वाली भावना-भर कह कर, यदि अपने प्रश्न को, पाठक के निर्णय पर ही छोड़ दू तो कदाचित भविष्य और पाठक दोनों मुझे क्षमा कर देंगे। इस समय स्थिति कुछ ऐसी है कि गद्य और पद्य मे दूरी एकमात्र समझदारी की रह गई है क्योकि कविता अब शब्दो-भर मे लिखी जाने लगी है और उन शब्दों की कविता को समझ पाना, मेरे लिये अभी भी टेढ़ी खीर ही बनी हुई है, पर, वह कविता है लेकिन उस समझ का मेरे पास अभी भी अभाव है।

शब्द-कोश को तलाश किये बगैर यदि यह रचनायें पाठक को ग्राह्य हो गईं तो कदाचित मेरी भावनाओं का तादात्म्य भी उनसे अवश्य हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

निरंकार नारायन सक्सेना

क्रम

अन्तर्विवेक

अन्तर्दृष्टि

अन्तर्मन

अर्न्तविवेक

सोते-जागते
उठते-बैठते

एक तुम हो
जो सदैव

ख़बरदार किये रहते हो।

मेरी चाही
अनचाही
इच्छाओं पर

एक तुम हो
जो सदैव

लगाम दिये रहते हो।

कर्म अकर्म क्या है
मन उसे चीन्ह नहीं पाता है

लेकिन तुम हो
जो मुझे सदैव

आगे किये रहते हो।

पाप-पुण्य
जन्म-मृत्यु
सुख-दुःख

सब मिथ्या हैं

बस एक तुम तुम हो
जो यह सब
अंगीकार किये रहते हो।

शत्रु-मित्र
कोई नहीं
कर्म-अकर्म
कुछ नहीं
पाप-पुण्य
भी नहीं
एक तुम
तुम हो

मैं यहां कुछ नहीं

सोते-जागते
सदैव
लगता है
बस है
यही सही
यही सही
यही सही।

जहां आदमी खो गया है

दस्तक
मैं उस दरवाजे पर दे रहा हूँ
जहां आदमी खो गया है

चकाचौंध कर देने वाली जिन्दगी जी लेने के बाद
मूल्यों में फ़र्क़ पड़ जाना कोई बड़ी बात नहीं
अच्छे से अच्छा पारस
समुद्र में गिर जाने के बाद डूब ही जाता है
दस्तक······।

कान अगर उसके बहरे नहीं हुए हैं
तो जरूर अन्दर के शोर ने
बाहर से आने वाली सभी आहटों को
पी जाने का दुस्साहस
उन्हें दे दिया है
मदहोशी
कोई ऐसी दारू नहीं
जिसका नशा सिर्फ़ रात को ही चढ़ता है
और सुबह होने तक उतर जाता है
कुसंगति में पड़कर
तप तो
ऋषि-महऋषियों का भी
भंग हो जाता है
दस्तक······।

पीढियां करवट ले चुकी हैं
आस्थायें टूट गयी हैं
पैमाने झूठे पड़ गये हैं
रास्ते भी बदल गये हैं
आने वाले कल की उमंग में
बीते कल की स्मृति धूमिल हो गई है
जो कुछ हो रहा है
अनायास तो नही है
दस्तक में...... ।

संस्कृति को नई परिभाषा मिल गई है
फ़िज, वी० सी० आर०, वीडियो, 'टू-इन-वन'
'थ्री-इन-वन' और 'ऑल-इन-वन'
के लिए तड़प रही है

संक्रांति के इस काल में
वह
कहीं नीचे
बहुत नीचे गिर गया है
इसीलिये
दिन-रात
सुबह-शाम
पलपल जीने की लालसा में
ठकुरसुहाती बातो में लीन
वह
बाहर की दस्तक
और भीतर के शोर में
कोई अन्तर नही कर पा रहा है

दस्तक मैं उस दरवाजे पर दे रहा हूँ
जहां आदमी खो गया है ।

प्रतिफल

खुशामद ने
आदमी को
अफ़सर तो बना दिया
लेकिन
आदमी न रहने दिया

महाशक्तियों से निवेदन है

हथियार
अगर सम्पन्न बना सकते हैं
तो किसलिए
हर सैकण्ड
उत्पन्न होने वाले
लाखों करोड़ों बच्चे
भूख और महामारी से
मर जाते है ?

हथियार
अगर रक्षा कर सकते हैं
तो क्यों
भय, शंका और विनाश के बादल
उमड़ते-घुमड़ते
चर्चा का विषय बन जाते हैं ?

हथियार
अगर जीवित रख सकते हैं
तो
खनिज, गेहूँ, तेल और गैस के सौदे
कैसे
आपस में
समझौते के विषय बन जाते हैं ?

कभी सोचा है
कितना अनिष्ट कर रहे हो ?
अपने को बड़ा और महान
बताने की चाह में

इस धरती को

मानव के लिए नहीं
पशुओं के लिए नहीं
कीट पतगों के लिए नही
सारी मानवता को
पल भर में
मिटा देने का
एकमात्र यत्न कर रहे हो।

दर्पण

वक्त
सबसे बड़ा दर्पण है
जिसमें आदमी को
अपना तमाम हुलिया
उसकी अपनी आंखों से
खुद दीख जाता है

अकुलीन कोई नहीं

दो मकान

एक दूसरे से
दूर
बहुत दूर
लेकिन
उनकी दूरी
उन मकानों में बनी
खुली खिड़कियों ने
कम कर दी है

क्योंकि

उन खिड़कियों से
वही हवा
वही धूप
और
वही गन्ध
उन सभी को मिलती है

जो

उन दोनों
मकानों में रहते हैं

देने वाले ने
प्रकृति का सब कुछ
इतनी बराबरी से दिया है

तो फिर क्यों

वह, तुम और हम
एक दूसरे से
ऊँचे नीचे
बड़े छोटे
होने का
दावा करते हैं ?

चेहरे

पहले भी
अक्सर होता था
चेहरे याद रहते थे
नाम भूल जाते थे
पर
इधर कुछ दिनों से
नाम तो क्या
चेहरे भी स्मृति से मिटते चले जा रहे हैं
इसलिए नहीं
कि मैं अब बूढ़ा हो चला हूँ
पर सच तो यह है
कि
वक्त ने
वह सब दिखा दिया है
जिससे
जो चेहरे
मेरी कुर्सी के
सदा
दायें-बांये घूमा करते थे
और
कुर्सी न भी सही
मेरी सम्पन्नता

और
एकाकी जीवन पर
रश्क करते थे
वास्तव में
वह मुझसे बहुत दूर थे
मैंने उन्हें अब
अपनी स्मृति के जंगल से
सदा सदा के लिए बाहर फेंक दिया है
कदाचित्
यह उनकी नियति
और मेरी उपलब्धि है
जिसका ज्ञान
हर व्यक्ति को
एक दिन
स्वयं हो जाता है
इसीलिए
नाम क्या
चेहरे तक
याद नहीं रह पाते हैं।

सन सतत्तर के नेता

जहाज़
जिस वक़्त
समुद्र में उतारा था
किसने उम्मेद की थी

कि

जहाज़ के खेनेवाले
कैप्टेन और कमांडर
इतने नासमझ
और लापरवाह हो जायेंगे

कि

सफ़र करने वाले मुसाफ़िर के लिए
उसकी मंज़िल तो क्या
किनारे से लग जाने के
लाले भी पड़ जाएंगे

मुसाफ़िर मंजिल तक न पहुंचे
यह साधारण जुर्म नहीं है

और

जहाज़
आपस की कलह से डूब जाए
यह भीषण अपराध है

जिसका मुआविज़ा

कैप्टेन और कमान्डर
दोनों को भरना पड़ेगा

मुसाफ़िर
ऐसे अपराधियों को
कभी माफ़ नहीं कर पायेंगे।

दर्द

आदमी
जब बेनक़ाब होता है
दिलबस्तगी
सिद्धांत
फतवे
उसूल
और
बाकी कमज़ोरियां

कुछ अर्थ नहीं रखती हैं
एक
दर्द
तब
बेहिसाब
होता है

आम आदमी

हर सवाल
आम आदमी के लिये उठ रहा है
हर योजना
आम आदमी के लिये बन रही है
देश की सारी की सारी शक्ति
आम आदमी पर लग रही है
और
आम आदमी
खुले आसमान के नीचे
बिना मकान
बिना छत
और
बिना आंधी-पानी की परवाह किये
घोड़े बेचकर सोया हुआ है
जैसे उसे पता है
उसकी भूख का हल
न तो सरकार की बनाई
पांच-साला योजनाओं में है
और
न ही
उन हमदर्दी भरे लेखों में
जिनके ब्लू-प्रिंट
ढलती रात में
वातानुकूलित कमरों में बैठे
देश के प्रतिष्ठित कहे जाने वाले
सम्पादकों ने
सुरा-सुन्दरी के साहचर्य में
उसकी हालत का जायजा लेकर
बहुत मेहनत से तैयार किये हैं

जैसे उसे पता है
उन ब्लू-प्रिंटों से
उसका भविष्य नहीं बदलना है
जैसे उसे पता है
वह सम्पादक
वह लेखक
उससे
कहीं जुड़े नहीं है
क्योंकि
उन्हें
दिन निकलने पर
रात की थकान दूर करने के लिए
एक नया जाम पीना पड़ता है
जिसकी क़ीमत
उसकी दिन भर की पगार से
दस गुना अधिक होती है
जबकि
उसे तो
भोर होने से पहले ही
फिर से काम पर निकलना है
आने वाले कल की
चक्की-चूल्हे का प्रबन्ध करना है
इसीलिये
वह आम आदमी
दुनियां से बेख़ौफ़
बेखबर
खुले आसमान के नीचे
बिना मकान
बिना छत
और
बिना आंधी पानी की परवाह किये
घोड़े बेचकर सोया हुआ है।

नेता से

तब
सोये रहे
समय
फिसलता गया
अब
कैसा समय
न गही कुर्सी का मोह
हिंसा
आतंक
तनाव
और
टूटता
खंडहर होता देश
ऐसी अपेक्षा तो न थी
तुमसे !

जहाज़

जहाज
बनाने पर
करोड़ों का खर्च आया है
बेशुमार मजदूरों ने
अपना पसीना बहाया है
असंख्य हाथों ने
उसे पानी में उतारा है
अपनी उम्मीदों का जनाज़ा देखने के लिये नहीं
जहाज
उनका वाहन है
जो उन्हें सुख समृद्धि
और
इक्कीसवीं सदी में ले जायेगा
कहीं आपस के झगड़े में
उसे
पानी में न डुबो देना !

विदेशी का थप्पड़

पाँच तारों वाला होटल नहीं
मुझे अपना देश दिखाओ

मेरे देश में
इतने बड़े होटल नहीं होते
और घर
बंगले नहीं
घर होते हैं
जिनमें लोग
अपनापन
सुख
और
शांति तलाशते हैं
नौकरों की जमात पर
शासन नहीं
झाड़ू
खुद बुहारते हैं

तुम्हारे देश में
मैंने सुन रखा है
बहुत ज्यादा ग़रीबी है
फिर
लोग
कैसे
घर नहीं
बंगले
और
शानदार मकान
महल
जैसे
बना लेते हैं
क्या तुम्हारी सरकार
यह सब देखती रहती है
और कुछ नहीं कहती है ?

देश-हितैषी

नेता है
जनता है
कुर्सी है
संगत
असंगत
मान्यतायें हैं
देश है
उसको बचाने के लिए
बहु-संख्यक
और
अल्प-संख्यक
सब हैं
और
सबको
त्याग की आवश्यकता है
पहल जो करता है
देश का
वही सच्चा हितैषी है।

असफलता में सफलता

कभी रास्ते बदल के
कभी रफ़तार तेज़ करके
मैंने
सफलता की मंज़िल की तरफ़
बहुत बार क़दम उठाये
लेकिन
कभी वह
कभी उनके भाई-भतीजे
साले-साली
और कुछ नहीं तो
दोस्तों के दोस्त ही
मेरी
कामयाबी में
रोड़े लगाकर मेरे सामने आये

मैंने
फिर भी हार नहीं मानी
और
अपने कदम सख़्ती से आगे बढ़ाये
लेकिन
कुनबापरस्ती
बदनीयती
की डिग्रियों के आगे
मेरे लिए
सारे दरवाजे
बंद ही नजर आये

मैं तब क्या करता

आख़िर मैंने कदम पीछे हटाये
सफलता न सही
असफलता में ही
मान से जी लिए
और मान से खा पाये
इतना संतोष किया
और फिर
कभी
कदम आगे नहीं बढ़ाये ।

निर्वेग

पगडण्डियां नहीं
सीधा-सीधा रास्ता पकड़ो
इस तरह चलने से
कदम भी जम कर पड़ते है
और भटक जाने का
अंदेशा भी नहीं रहता है
आराध्य दुष्कर नही होता
लगन
साधना
और
मार्ग
महत्व रखता है

आदर्शवादी लोग

मुझे
उन लोगों से कुछ लेना देना नहीं होता
मैं तो
अपने ज्ञान के लिए
उन्हें नापता तोलता रहता हूँ !

पर पीड़ा देख कर
जब उनके आंसू
रुकने का नाम नहीं लेते हैं
तब मुझे
अपनी संगदिली का
अहसास होने लगता है

आदर्शवादी लोग
कितने मुखौटे लेकर जीते हैं
उनका आकलन कर पाना
मैं अपनी उपलब्धि मानता हूँ

बड़े-बड़े टेंडरों के विक्रेता
'इम्पोर्ट' 'एक्सपोर्ट' के 'लाइसैंसी'
आयात-निर्यात के ठेकेदार
देश के सारे चोर डाकू
'स्मगलर' सरदार
उनसे लिप्त, सरकारी कर्मचारी
पुलिस दरोगा अफसर और चोबदार
जब
भीगी बिल्ली की तरह
हाथ बांधे
उनके दरबार में खड़े मिलते हैं

तब मुझे उनका व्यक्तित्व
कितना महान
लगता है
मुझे उन लोगों से कुछ लेना देना नहीं होता !
मैं तो अपने ज्ञान के लिए उन्हें नापता-तोलता रहता हूँ ।
फिर

सूरज ढलने के बाद
एक नये आयाम की तलाश में
किसी फ़ाइव स्टार होटल के
बंद कमरे में
लड़खड़ाते कदमों के साथ
उन्हें
जब मैं
किन्हीं नाज़ुक बाँहों के सहारे
दिन भर की थकान दूर करने का ज़रिया
ढूंढता देखता हूँ
तब मुझे
उनकी पूरी की पूरी
सारे दिन की व्यस्तता
सरकारी फ़ाइल बिना पढ़े
दस्तख़त करने की मजबूरी का
सही-सही अन्दाज होने लगता है

ऐसे आदर्शवादी लोगों से मुझे कुछ लेना देना नहीं होता
मैं तो अपने ज्ञान के लिए उन्हें नापता-तोलता रहता हूँ ।

तुम कैसे भगवान हो

तुम्हारा जन्म
इसी जगह हुआ था
तुम्हारे लिए
शिवालय भी इसी जगह बनेगा
हमलावरों ने खोद कर
तुम्हारे जन्म स्थान पर
मस्जिद बना दी थी
तुम पत्थर की मूर्ति बने रहे
तुमने कभी उनका
विरोध भी नहीं किया
तुम कैसे भगवान हो ?

तुम अपने जन्म-स्थान की भी
रक्षा नहीं कर सके
सीता को पाने के लिए
तुमने रावण का वध कर दिखाया
लेकिन
अपनी जन्म-भूमि को बचाने के लिए
तुमने कुछ नहीं किया

मैं तुम्हारी पूजा करता हूँ
इसलिए
अयोध्या में
तुम्हारी जन्म भूमि पर
एक मंदिर बनाऊंगा
देश के कोने-कोने से
जल और मिट्टी लाऊंगा
तुमने जो काम पूरा नहीं किया
वह पूरा कर दिखलाऊंगा

क्यों कहते हो
तुम्हें यह पसंद नहीं है
ख़ुदा और तुम में
कोई भेद नहीं है
मूर्ति तोड़ दिये जाने से
तुम नहीं मरे थे
फिर वहीं स्थापित
कर दिये जाने से
तुम जी नहीं उठोगे ?
तुम तो कण-कण में व्याप्त हो
काबा-काशी
मक्का-मदीना
चर्च और गुरुद्वारों में भी
एक से विद्यमान हो

आराधना के स्थल
मंदिर, मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे
किसी एक मज़हब
जाति या धर्म के नहीं होते हैं
पूरी की पूरी कायनात का
उस पर अधिकार होता है
ईश्वर अल्लाह
सत और गुरु
राम और रहीम
सबके लिए
एक समान होता है

आपस के झगड़े छोड़ो
और कण-कण में
अपने ज्ञान-चक्षु खोलकर देखो
मैं कैसा भगवान हूं
यही मेरा तुम सबको संदेश है।

दंगा करने वालों

दंगा करने वालों
झुग्गी-झोपड़ी
जलाने वालों
बेगुनाह लोगों को
हत्या करने वालो
जागो
कहीं ऐसा न हो
तुम्हारे गुनाहों का बोझ
तुम्हें अपने आप पर
शर्मिन्दा कर दे
और तुम
एक दिन
अपनी
मां-बहनों के
हत्यारे कहे जाओ
उनकी
अस्मिता को बेचने वाले
निर्लज्ज, धोखेबाज समझे जाओ
अमर्यादा
दुरकर्म भी
अनाचर
अत्याचार होता है

जिसकी सजा
आदमी
जन्म-जन्मांतर भोगता है
मुट्ठी भर दानों से
आजीवन पेट
नहीं भरता है

तुम ऐसी
पहचान मत बनाओ
समय रहते संभल जाओ

छोडो सब दुश्कर्म
रूखो-सूखी
ईमान से
जितनी मिले
जैसी मिले
अपने देश में मिले
खुशी-खुशी खाओ
अभी भी समय है
अच्छे बन जाओ
अच्छे बन जाओ !

पहाड़

पहाड़ों को देखो
कहां पै खड़े हैं
धरती से निकल कर
आसमां पै चढ़े हैं

इन्हें किसने इतना ऊचा उठाया
इन्हें किसने दिल से पत्थर बनाया

लुढ़कते है तो जान लेते किसी की
चढ़ो इन पै
तो थकान देते घनी सी
आंधी पानी से डरते नहीं यह कभी भी
ऐसे तने हैं जितने बड़े है

न सोते कभी हैं
जागते ये रहे हैं
पहाड़ों को देखो कहां ये खड़े है।

रास करने को इनसे नदियां आतीं
झरने भी बनातीं लुक-छिप जातीं
चढ़ छातियों पै
इनकी नालियां बन जाती
अपनी सीमा घटाती
इनके चक्कर लगातीं
मगर
बेअसर
ढीठ से ये खड़े है
पहाड़ों को देखो कहां ये खड़े है।

बुज़ुर्गों का घर

घर बनाना
कितना मुश्किल होता है
लेकिन
उजाड़ देना
कितना आसान

एक लम्बा सफर
इस कशमकश के अहसास को
कम नही करता है
उल्टे
याद दिलाता रहता है
कि मंजिल तक पहुंचना
किन-किन आपदाओ से भरा था
और
उसको सहेज रखना
एक भारी जिम्मेवारी है
उन सबकी
जो उस घर में बैठ कर
सुख चैन से ज़िन्दगी जीना चाहते है
अपने बुज़ुर्गों का दिया हुआ घर
बनाये रखना चाहते हैं !

अन्तर्दृष्टि

समुद्र से

शिकायत
किनारों से नहीं
समुद्र से है
जिसने
थपेड़े तो बहुत दिये
लेकिन
कैसे भी
डुबो न सका

स्त्री है

आज करवा चौथ का दिन है
आज फिर वह सारे दिन व्रत रखेगी
आज फिर वह लहंगा दुपट्टा पहनेगी
आज फिर वह दुल्हन बनेगी
और
चाँद निकल आने की बाट जोहेगी
अपने पति की पूजा करेगी
उससे
जन्म-जन्मान्तर न बिछड़ जाने की
मानता मांगेगी
करवा गायेगी
और पूरे साल
पति से पाई यातनाओं को
भूल जायेगी

स्त्री है
सहती आई है
सहती जायेगी।

बच्चों ने कहा
चांद निकल आया है
उसके लिए तो
झूठ की परात में
सच जैसे
कुछ और बन-संवर के आया है

क्यों
कल फिर सुबह होगी
कल फिर
वह अपने उसी पति से
गाली खायेगी
मारी जायेगी
स्त्री है
इस तरह ही
सहती आई है
इस तरह ही
सहती जायेगी।

आदमी

हरे खेत
भागते पेड़
और भीगा
आसमान
बम्बई
नगरी की तरफ़
लिए जाता है
लेकिन
जो घर
गाँव
और साथ
पीछे
छोड़ दिया है
वह कौंध की तरह

बारबार
स्मृति में
चला आता है
चलते रहना अगर जिन्दगी है
तो छोड़ते जाना भी एक मजबूरी
हर सफ़र
आदमी को तन्हा करता जाता है
लेकिन
आदमी की
प्रकृति
भी
कैसी है
जो
एक सफर छोड़ता है
और तुरन्त
दूसरे के लिए तत्पर हो जाता है ।

विश्वास

आदमी
टूट जाता है
बिखर जाता है
फिर भी सहे जाता है
इसलिए नहीं
कि फ़ौलाद का बना है

बल्कि
इसलिए
कि
वह किसी विश्वास पर टिका हुआ है
और वह विश्वास
उसे गिरने नहीं देता
छोटी सी पहचान
आदमी को
कितना
बलवान बना देती है।

परमार्थी

सारी दौड़ धूप
सिर्फ़
अगर
अपनी जरूरत के लिए है
तो
उन लोगों के जीवन का
क्या अर्थ है
जो सिर्फ
दूसरों की चिन्ता में
जिया करते हैं

एक छप्पर की चाह

यह आलीशान घर
यह कीमती कारपेट
यह रंग बिरंगे पर्दे
यह वीडियो के चित्र
यह टी० वी० पर दिखाई
जाने वाली फिल्म
यह कैसेट पर बजती
संगीत की धुन
न जाने क्यों मुझमें
ऊब और वितृष्णा
ही पैदा करती हैं
मैं तो
इन बाहरी परिधानों से
मुक्त होना चाहता हूं
मुझे तो
अपनी जन्मभूमि मे
एक छप्पर
खुली हवा
खुला आसमान
और
हरी धरती भर चाहिए।

सड़क चुप रही

तुमने
कागज फाड़कर
किरचियां सड़क पर बिखेर दीं
सड़क चुप रहा
उसने
तुमसे कुछ नहीं कहा
लेकिन
सवेरे सफ़ाई करने वाले ने
जब
तुम्हें एक मोटी सी गाली दी
तो
सड़क की व्यथा
और
अपनी बेवकूफी
तुम्हें समझ आई !

आदमी की रात

गहराता आसमान
काले-पीले बादल
रुकी-रुकी सी हवा
मुँह लटकाये पेड़
ठहरी हुई शाम
खेत से लौटता किसान
भागते मजदूर
दूर कोलाहल
पास का सुनसान
कहता है
प्रकृति अब सोने लग गई है
लेकिन
एक-एक कर जलते चिराग़
बिजली की रोशनियाँ
परवानों की होड़
पायलों की झंकार
शहर के रईस
उनके ठाठ-बाट
मोटरों की कतार
गुलाब इत्र की महक
सुरा-सुंदरी का प्यार
अब देखता हूं
तो लगता है
प्रकृति तो सो गई है
लेकिन
आदमी की रात अब होने लग गई है !

प्रकृति-जड़-चेतन

चलने को दिन होता है
ठहरने को रात आती है
पर
न तो वह चलता रहता है
और
न यह रुकने पाती है
बात मजबूरी की नहीं
एक क्रम की है
जिसको बनाए रखने के लिए
असीम की सत्ता
कहीं
एकसी
मिलती नजर आती है

इसीलिए

कभी दिन होता है
तो कभी रात आती है

और

सारी की सारी प्रकृति
कभी जड़
तो कभी चेतन
नजर आती है

तिलांजलि

क्रूर
वह नहीं
मैं हूँ
जिसने
बिना आगा-पीछा देखे
बिना अधिक सोचे-समझे
उन सबको
जो मेरे घेरे में रहते थे
सदा-सदा रहना चाहते थे
हमेशा
हमेशा के लिए
तिलांजलि दे दी है

ज़िन्दगी में
इतना परायापन
मैंने पहले
कभी अनुभव नहीं किया
क्योंकि
उन सबसे
जो
अपनों की संज्ञा में आते थे
मुझे
यह
असत्य और कटु
सुनने को मिला
जिसकी
मुझे
कभी अपेक्षा नहीं थी।

सब-लैटिंग

तुम, सरकारी मकान के
'अलोटी' थे
तुम्हें सरकार से
फ़्लैट
किराये पर मिला था
और तुम अपने आपको
मकान का मालिक समझ बैठे
तुमने, मकान का एक हिस्सा
किसी को किराये पर उठा दिया
कितना अनर्थ किया
'सब-लैटिंग' सरकार के क़ानून में जुर्म है
तुमने एक जुर्म कर लेने के बाद
और आगे जुर्म करना शुरू कर दिया
तुम
एक के बाद एक किरायेदार बदलने लगे
सरकारी 'पैड' और कागज चुराकर
किरायेदार को
जालीपत्रों द्वारा
नई नई धमकियां देने लगे
इस तरह
रुपये के मोह ने तुम्हें अंधा बना दिया
यही नहीं
तुमने अपने ही रिश्तेदारों से भी

नई-नई चाल
शुरू कर दी
पहले
उन्हें अपना किरायेदार बनाया
फिर
सारी शर्म और हया बेचकर
उनसे किया इकरार भी तोड़ गिराया
उनसे लिया कर्ज़
जो कभी तुम्हारे आड़े वक़्त काम आया था
तुम्हें अपनी हरकतों पर शर्मिंदा करने के लिये
काफी न हुआ
तुमने अपने रिश्तेदारों का छप्पर भी तुड़वा डाला
उनकी 'नेम-प्लेट' भी ग़ायब कर दी
ताले बदल डाले
"लैटर-बाक्स" हटवा दिये
और उनकी चिट्ठियां तक ग़ायब करने लगे
फ़्लैट के 'अलोटी'
तुम
जो
दिन में दो-दो घंटे पूजा करके
भगवान को धोखा देते हो
सिर्फ रुपये-पैसे का हिसाब जानते हो
तुम अपने बच्चो को,
बताओ उस समय
क्या जवाब दोगे
जिन्हे तुमने उल्टा-सीधा पढ़ाया
अपनों से ही दूर किया
वह तुम्हारे ही बच्चे नहीं
तुम्हारे किरायेदारों के भी कुछ लगते हैं
भगवान
तुम्हें सुबुद्धि दे

हम तो बस यही अब प्रार्थना करते हैं
अन्यथा
मकान के 'अलोटी'
यह समझ लो
तुमको किराये पर दिया हुआ मकान
चौबीस घंटे में ख़ाली करवाया जा सकता है
तुम्हारा माल और असबाब सड़क पर
फिकवाया जा सकता है
'फ़्लैट' के मालिक
'सब-लैटिंग' जुर्म है
और तुमने वो जुर्म किया है।

शब्द-शक्ति

दुनिया भरके
बदमाशों को
सुधारने का ठेका
तो मैंने नहीं लिया है
लेकिन
जो लोग
पथ भ्रष्ट हो गये हैं
उन्हें सीधा रास्ता दिखा देना
मैं अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ
मेरे पास बहुत से
उपचार नहीं हैं
चमत्कार भी नहीं हैं
मात्र कुछ शब्द हैं
जो तलवार से भी कट नहीं पाते
सीधे हृदय पर प्रहार करते हैं
बिगड़े हुए लोग
अक्सर उनसे सुधर जाते हैं।

भारत-दर्शन

'फ़ाइव स्टार' होटल में
अलग बने काऊंटर

रिसैप्शन' इन्फोरमेशन और कैशियर
होटल के 'स्टार' तो समझाते हैं

लेकिन बाहर से आये
टूरिस्ट की
'इकनौमी' से
मेल नहीं खाते हैं

'टूरिस्ट' के लाये पौंड और 'डालर'
रुपयों में तो बदल जाते हैं
लेकिन 'टूरिस्ट' दिल्ली देखकर ही
भारत दर्शन कर जाते हैं !

शांति का पैग़ाम

वह भी तैयार
हम भी तैयार
धमकियां
लड़ाई
ख़ून-ख़राबा
सब होंगे भागीदार
कौन बचेगा
कैसे बचेगा
जब आणविक होंगे हथियार
वायु प्रदूषण
जल प्रदूषण
से
हो जायेगा
मानव का संहार

नष्ट होंगे मूल्यवान सब ग्रंथ
नष्ट होंगी संस्कृतियां
नष्ट होंगे प्रासाद
इनसे भी यदि कोई
रहा बचा तो
होगा
गूंगा, लंगड़ा और अपाहिज
हड्डियों का कंकाल
ऐसा इंसान
पाकिस्तान
न
हिन्दुस्तान

सारी भूमि बन जाएगी,
हीरोशिमा
नागासाकी
श्मशान
कब्रिस्तान

इसीलिए

सोचो
फिर से
नहीं लड़ाई
हो भविष्य में
जिससे

जिन्दा रहे
पाकिस्तान
और
हिन्दुस्तान

शान्ति
का
भी
यही पैग़ाम।

ग़रीबी की सीमा-रेखा

ग़रीबी को सीमा-रेखा नापने वालों
शब्दों के जाल से
धरती को
आसमान तक पहुंचाने वालों
सरकारी ख़र्च से
देश और विदेश में
भ्रमण करने वालों
अपनी छवि बनाने के लिए
रेडियो और टी० वी० पर
नित्य नई-नई छवियों में प्रकट होने वालों
मैं पूछता हूँ
क्या आजादी के बाद से
मेरे देश में कुछ नहीं हुआ है

वरना

क्या वजह है
जो तुम्हारी दृष्टि
उस ओर नहीं जाती है

जब

मेरा देश सुई तक नहीं बनाता था
लोग अकाल से पीड़ित
लाखों करोड़ों की संख्या में
भूखों मरा करते थे
ढोर और पशुओं से बद्तर
ज़िन्दगी जिया करते थे
'डोग्स' और 'इंडियन्स' की तख़्ती देखकर
जब उनकी आंख में आंसू नहीं
लहू उतर आता था

अपने ही देश में
सम्मान से जीते रह सकना
सुनहला सपना सा
देखना कहा जाता था

उस देश की सन्तानों
मैं तुमसे पूछता हूँ
क्या आजादी के बाद से
मेरे देश में कुछ नहीं हुआ है

पीड़ा और अकाल की बात क्या है
अनाज के मामले में भी
मेरा देश
आत्म निर्भर हुआ है
प्रगति की रफ्तार
न तेज सही
देश ने तीन महायुद्धों का
सामना किया है
सुई की बात अब क्या करें
'एटम' से लेकर
अग्नि 'मिसाइल' तक
मेरे देश ने
अपने ही बल पर
अपने ही हाथों
निर्माण किया है
बिखर गई अर्थव्यवस्था को

बैंक राष्ट्रीयकरण द्वारा
अपने ही ढंग से
एक नया जीवन प्रदान किया है
नदियों और बांधों को बांध-बांध कर

राजस्थान जैसे मरुस्थल को भी
बिजली और पानी से भर दिया है

जवाहर के शब्दों में
भाखड़ा, भिलाई जैसे मंदिरों को
चप्पे-चप्पे पर खड़ा कर दिया है
पिछड़ी कही जाने वाली
माताओं और बहनों के लिए
साठ प्रतिशत
जगह सुरक्षित कर देने के बाद
'ट्राईबल्स' और अल्पसंख्यकों
तक को
देश में
सम्मान से जीने का अवसर दिया है
हर परिवार को
जवाहर योजना द्वारा
न सिर्फ स्वावलंबी बनाया है
वरन् उत्तरदायित्व निभाने के लिए
गांव-गांव शहर-शहर
पंचायत राज और नगर पालिकाओं का
निर्माण कर
सत्ता का
विकेन्द्रीकरण कर दिया है
इस तरह
मेरे देश ने
राजनीति के कोश में
विश्व को
एक नया अध्याय
जोड़ने पर विवश कर दिया है
गरीबी की सीमा रेखा नापने वालो
मेरे देश के सपूतो
आंखें खोलो
और
मेरे देश की जनसंख्या नापो
देखो
विभाजन के बाद भी
मेरा देश पहले से कितना महान हो गया है।

कविता

जो सोचा
जो कहा
जो लिखा
जो समझ में आ गया
वैसे
प्रकृति थी
शिला थी
तिमिर था
मैं था

खाड़ी युद्ध

जंग शुरू हो गई है
मानवता
एक बार फिर से
अंधी हो गई है

एक का हठ
दूसरे की लालसा
हथियारों के जोड़ से
छोटे-छोटे मूल्य
और आपसी गठबन्धन से

सहसा बिखरे

एक राष्ट्र की कमज़ोरी से
और

विश्व पर
अपना एकाधिपत्य
थोप देने के मोह से

पशुता
जैसे बेचैन हो गई है

मानवता
नंगी हो गई है
जंग शुरू हो गई है
जंग शुरू हो गई है

तेल
हथियाने की भावना
जला डालेगी
राष्ट्रीय संग्राहलयों को
गिरजे, मन्दिर, मस्जिद, बुतखाने को
मां, बाप, भाई, वहिन, दोस्त-अहबाब
इंसानों को

कीट पतंग नहीं रहेंगे
पर्यावरण में
बदलाव ले आने को
सब कुछ दूषित हो जाएगा
दुर्गंध उठेगी
देख
लाशों के अम्बारों को

सुबुद्धि
उन्हें देगा कौन

किसकी बात
सर
उनके चढ़ेगी
मारकाट
हिंसा
जिनके
व्यापार का लक्ष्य रही है

मनुष्य योनि में
पहुंच जिन्हें
युग कितने अब तक
बीत गये
ज्ञान आनन्द नित्यता
उनसे
फिर भी कितनी दूर रहे

नहीं विकास हुआ इन्द्रियों का
गोस्वामी न बन पाये
रमन्ते योगिनो अनन्ते
'ओम एकाक्षर ब्रह्म' हीन
वैकुण्ठधाम न पहुंचा पाये

पंचशील, नाटो, यू० एन० ओ०
"सार्क नोन अलाइन्ड"
सब अपना-अपना तेज खो चुके

पशुता की गरिमा में जैसे

शान्ति प्रयास भी विफल हो चुके

ऐसे में

धरती पर फिर से
एक पैग़म्बर उतरेगा
नाश हुई सारी संस्कृति पर
जो
मूक
बचे कंकालों से
कथा सुगढ़ यह कहेगा

तुम बन्दर-भालू पक्षी बन जाओ
करो यहां फिर से रचना
और
नई सृष्टि बनाओ !

वृद्ध की ज़रूरत

जब आदमी
वृद्ध हो जाता है
और
न उससे
कोई कहने
और न ही
सुनने वाला रह जाता है
तो
दुनिया-जहान् में चारों तरफ़
उसे अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता है
फूलों में वही सुगन्ध होती है
नदी के जल में
वही बहाव होता है
सूर्य की किरणों में
वही प्रकाश
वही चमत्कार होता है
लेकिन
जब आदमी
वृद्ध हो जाता है
उसकी आंखें पथरा जाती हैं
उसकी मांस-पेशियां ढीली पड़ जाती हैं
पानी की कल-कल
और ब्यार के झोंके
उसे सहरा नहीं पाते हैं

वह प्रकृति के
सारे उपादानों को भोगने से
वंचित हो जाता है
अंधा और बहरा हो जाता है
उस समय
तुम अगर
दो मीठे बोल
बोल लेते हो
तो वह
कितना कृत-कृत हो जाता है
अपनी सारी की सारी
मजबूरियों के बावजूद
वृद्ध भी
आदमी हो जाता है
इन्सान हो जाता है।

देश के दरिद्दर

चन्द्र शेखर चले जाएंगे
राजीव आएं न आए
कलंक बहुतों के धुल जाएंगे
मन्दिर-मस्जिद गुरुद्वारे
जहां हैं वहीं रह जाएंगे
वी० पी० का मंडल
अटलजी की घोषणा
अडवाणी की जन्म-भूमि
रामराज्य के सपने
कितनों ने देखे है
कितने देखते रह जायेंगे
इलैक्शन तो जनता करेगी
फिर सरकार यह
क्या खा के बनायेंगे
या
मिलके बनायेंगे
सरकार कैसे बनायेंगे
सवाल
सारे के सारे
वैसे के वैसे
उठते चले आयेंगे
देश के दरिद्दर
न कभी दूर हुये हैं
न इन लीडरों से
दूर हो पायेंगे
यह बस
धोखा देते रहे है
धोखा देते जायेंगे
वोट आज मांगते हैं
कल नोट यही खायेंगे।

ईश्वर

जो नहीं दिखता
जो नहीं बोलता
जो नहीं रोकता

लेकिन

जो है भी
और नहीं भी है

सिर्फ़

देखने को उसे
आंख नहीं
विश्वास चाहिए

सुनने को उसे
कान नहीं
अन्तर-आत्मा की
आवाज़ चाहिए

करने और चलने को
उसके संग
हाथ-पांव नहीं
एक दूसरी तरह की
पुकार चाहिए

फिर
सर्वत्र ही

वह है भी
और नहीं भी है

कोई अन्तर नहीं पड़ता !

अन्तंमन



पूर्वाभास

जब
ठगे
थके
अनजाने लोग,
मुझे रास्ते में मिल जाते हैं
और
उन पर जो गुजर रहा है
उसका दर्द
और
जो उन्हें मिल नहीं पाया है
उसके लिए उनकी बेचैनी
और
जो वह कर नहीं पा रहे हैं
उसके लिए
उनकी बेबसी
के
इकट्ठे किये हुए मजमून
मैं उनकी आंखों में पढ़ता हूँ
तो
मुझे
महसूस होने लगता है
कि
इंकलाब
बहुत जल्दी आने वाला है।

अकूत

तुम
जब मुझसे
कोई सवाल नहीं करते हो
और मुझे देखते भर रह जाते हो
तो मैं ऐसा महसूस करने लगता हूं
कि
तुम्हें
तुम्हारे सवाल का जवाब मिल गया है

तुम्हारी कपनटी पर उग आये सफ़ेद बाल
इस बात का सबूत देने लगते हैं
कि जो दिन तुम गुजार चुके हो
उनसे तुम मुझे महरूम नहीं रखना चाहते हो

तुम्हारी यह दरियादिली
जहां मुझे इतना जानदार बना देती है
तुम्हारे न पूछे गए सवाल
वही मुझे, उतना शर्मिंदा कर देते हैं
लेकिन
मेरे सरपरस्त

यह छिपी हक़ीक़त है
जो मैं तुमसे बयान करना चाहता हूँ
कि
मेरे हर उठाये क़दम के पीछे

यह मौजूद यक़ीन
कि तुम्हारा हाथ मेरे सर पर है
मुझे
कुछ भी कर गुज़रने से रोक नहीं पाते हैं।

'हां' और 'न'

दर्द
जो अब तक सहे
दर्द कहां
जीने की लालसा थी
जिसने
किसी तरह
अब तक
जीने भर दिया
पर 'हां'
अब तुम्हारी 'न' ने
दर्द क्या होता है
यह थोड़ा-थोड़ा
समझा दिया है।

समझदार लोग

वक्त जरूरत पर
सब एक दूसरे के
काम आ जाते है
लेकिन
कुछ लोग हैं
जो
ऐसे समय पर ही
कन्नी काट जाते है
वह स्वार्थी नहीं
स्तंभ हैं
अपनी मर्यादा के
जो
दूसरे का विनाश
और अपना हित
देखकर ही
आगे कदम बढ़ाते हैं।

'हां' और 'न'

दर्द
जो अब तक सहे
दर्द कहां
जीने की लालसा थी
जिसने
किसी तरह
अब तक
जीने भर दिया
पर 'हां'
अब तुम्हारी 'न' ने
दर्द क्या होता है
यह थोड़ा-थोड़ा
समझा दिया है।

समझदार लोग

वक़्त जरूरत पर
सब एक दूसरे के
काम आ जाते हैं
लेकिन
कुछ लोग हैं
जो
ऐसे समय पर ही
कन्नी काट जाते हैं
वह स्वार्थी नहीं
स्तंभ हैं
अपनी मर्यादा के
जो
दूसरे का विनाश
और अपना हित
देखकर ही
आगे कदम बढ़ाते हैं।

मज़दूर

बांस की
खप्पच्चियों से
लटकता आदमी
जो तुम्हारी आलीशान इमारत को
रंग-रोगन से चमका रहा है
बाजीगर नहीं
मजदूर है
जो अपनी रोटी कमा रहा है
सूरज छिपने पर
तुम
उसे
पगार पूरी दे देना
कहीं ऐसा न हो
कि
उसके घर
चूल्हा भी न जल सके
और
रोटी भी
बिना साग के
खाई
जाए।

पीढ़ियों का अन्तर

चीनी के भाव
जब छह् आने सेर हो गए थे
तो मेरे बाप ने मुझसे कहा था
बेटे अगली बार गुड़ ले आना
आज
जब चीनी के भाव
सोलह रुपये किलो हो गए हैं
तो
मेरे बेटे के बेटे ने कहा
'ग्रांड पा'
आप झूठ बोलते हैं
और किस्से भी
अपने मनसे गढ़ते है :
'सोलह रुपये किलो बिकने वाली चीनी
क्या कभी छह् आने की
एक सेर मिल सकती है।'
मैं खामोश हो गया था
क्योंकि
मेरा भोगा हुआ सच
मासूम बच्चे के लिए
एक हकीकत
एक सच
कभी नहीं बन सकता था।

अकेलापन

भीड़ में
अकेलेपन का अहसास
ऐसी मानसिकता है
जो घेरे तो रहती है
लेकिन
ब्यान नहीं की जा सकती है
दूरी
समझ और अनुभव की है
जैसे
चांदनी रात
सुख देती है
तो
तड़पा भी जाती है।

यथार्थ

जब कभी
मैंने किसी खास आदमी को
खुश करने की कोशिश की है
तो खुद
अपनी निगाह में
गिर गया हूं
क्योंकि
तन्हाई
प्यार
और तक़ाज़ा
जैसी शिद्दतें
आदमी
खुद तो बरदाश्त कर लेता है
पर
कोशिश करके
मांगी हुई खुशी
आदमी को
किसी तरह
भी
जीने नहीं देती है
सच्ची खुशी
आदमी को
झोली फैलाने से नहीं
झोली भर देने से
मिलती
है।

बीता वसन्त

गिरती
पत्तियों
को देखकर
पेड़
ने समझा
था

कि

वसन्त
उसके
द्वार
पर

फिर
आ
गया
है

नहीं पता था उसे
प्रकृति के उस मजाक का

जब
अपनी
छाँव
में पले
बटोहियों
के
मुख
से
उसने
सुना
कि

पेड़
तो
अपनी
उम्र
पूरी
कर
चुका
है

बसन्त

अब
उसके
द्वार
पर
कभी
नहीं
आएगा !

सोचने की बात है

वक्त बहुत कम है
दर्द बहुत ज्यादा है
बांट लो प्यार से
तो न वह कम
और न यह ज्यादा है।

कौन कितना नीच है

सिद्धांतों से विमुख होने के बाद
आदमी षडयन्त्र रचता है
और
षडयन्त्र
छोटा या बडा
कोई महत्व नहीं रखता है
गिरने वाले की
नीचाई
को
और अधिक
जान लेने का
प्रमाण भर देना है।

मानव

मानव
मन
सब कुछ ग्रहण कर लेता है
लेकिन
अपनों से पाई उपेक्षा
एक पल को भी
बरदाश्त
नहीं कर पाता है
कोई एक भ्रांति
सम्मोहन के
तमाम जादू को
तमाम रिश्तों को
ख़त्म करने में
तनिक देरी
नहीं कर पाती है।

एक सवाल

जब सब लोग
जाग पड़ते हैं
तुम सोये पड़े रहते हो
लेकिन
जब सब सो जाते है
उस समय
तुम्हें कौन सी तकलीफ जगाये रखती है।

हक़ीकत क्या है

चलते-चलते
यह तो बताते जाओ
फिर कब लौट कर आओगे
चाँदनी रात में
यह सवाल भले तुम्हे अच्छा न लगे
लेकिन
कोई तुम्हारा इंतज़ार
कब तक करता रहे
उसकी मियाद न सही
जो सच है
वह तो उससे न छिपाओ।

एक आवाज़

हिंसा
तनाव
आतंक
सब कुछ है
हो सकता है
वह सब कुछ
जो कभी नहीं हुआ है
हठ
उनका
या
इनका
कुछ अर्थ
नही रखते है
देश सर्वोपरि होता है।

उपस्थिति-तीसरे आदमी की

अभी कुछ देर पहले
मैंने उन लोगों से सुना
था
वह
यहां आने वाले है
हो सके
तो तुम
यहां से चले जाओ
तुम्हारी उपस्थिति
और कुछ नही
एक भ्रम तो पैदा कर सकती है
वह सोच सकते है
हम दोनों के बीच
यह तीसरा आदमी
यहां क्यों मौजूद है!

वसीयत

मेरे जाने के बाद मेरे बच्चो
तुम मुझे गलत मत समझना

प्यार
बांटने से फैलता है
और
धन बांटने से कम होता है

इसलिए

मैंने अपना अर्जित धन
ऐसे हाथों में सौंप दिया है

जो तुम्हें
सदैव प्यार ही प्यार देंगे

केन्द्रित हुआ प्यार
बांटने से नहीं बढ़ता है
तुम सब मिलकर
इसको
सहेज सकोगे
ऐसी
मैं कामना करता हूं

और

मेरा अर्जित किया हुआ धन
तुम सब के काम आये
ऐसा मैं उन हाथों पर विश्वास करता हूं
जो तुम्हें सदैव प्यार ही प्यार देंगे।

बुढ़ापे का भ्रम

सीटी सी बजती जो गूंज
अब मुझे हर वक्त अपने कानों मे
सुनाई देने लगी है
वह कहीं तुम्हारी पगध्वनि तो नही
जो मेरा पीछा
अब भी छोड़ना नहीं चाहती।

घर तो घर ही रहना चाहिये

मेरा ख़्याल था
सब कुछ ठीक हो जायेगा
वह रास्ते पर आ जायेगा
भटकाव, बिखराव
और अलगाव की भावना
इस कदर जड़ नहीं पकड़ लेगी
कि वह
इस घर से
दूर बहुत दूर चला जायेगा

घर तो घर ही रहना चाहिये।

जिसमें रहने वाले हर प्राणी को
अपना जीवन
अपने ढंग से जीने का
पूरा अधिकार होना चाहिये
लेकिन इसका यह मतलब नही है
कि अपने ढंग से जीवन जीने के लिये
घर के किसी भी व्यक्ति का
यह अधिकार है

कि वह जो चाहे करे
बात या बे बात पर ही
झगड़ा-फ़साद खड़ा कर दे
घर की सारी शान्ति
चैन, सुख,
अपने दिमाग़ के फ़ितूर की ख़ातिर
भंग कर दे
और इस तरह
घर में रहने वाले हर प्राणी का
जीवन ख़तरे में डाल दे
घर की मर्यादा ताक़ पर उठाकर रख दे
और खुली हवा
खुली रोशनी से भरपूर घर में
एक नई दीवार खड़ी करदे
दीवारों में बंटा घर
घर नहीं रह जाता है

ग़लत व्यक्ति की
ग़लत मानसिकता से
सारा का सारा घर
चौपट हो जाता है

घर तो घर ही रहना चाहिये।

मतभेद और झगड़े
किस घर में नहीं होते हैं
छोटे बच्चे रूठ तक जाते हैं
बहुत बार घर छोड़कर चले जाते है
लेकिन घरवाले उन्हें छोड़ नहीं देते हैं
पुचकारते और मनाते हैं

उनकी ग़लती का अहसास
उन्हें कराते हैं
पश्चाताप का अवसर उन्हें देते हैं
और ठीक रास्ते पर उन्हें ले आते हैं
इसलिये
अब मैं सोचता हूं

फ़र्ज
आगे चल कर
घर वालों का बन जाता है
जिससे भटका हुआ व्यक्ति
पथ भ्रष्ट न होने पाये
घर की मर्यादा भी बनी रहे
और घर में
सुख-शान्ति भी
लौट आये
घर तो घर ही रहना चाहिये !

जो विस्मृत न हुआ

वह घर
वह दरवाजा
वह बैठक
जहां हम अक्सर मिलते थे
आज भी
मेरी आंखों से दूर नहीं हो पाते हैं
क्योंकि
न उसके एक तरफ उठतीं थी
जमुना की लहरें
और
न वहां बना था कोई मक़बरा
और
न ही वहां लगता था
कोई
इंसानों का हुजूम
जो
चलता-फिरता
अठखेलियां करता
हंसता
गुनगुनाता
और
फिर

एक सही अंदाज से कहता
यह रहा
उसका बनाया ताजमहल
यह रही
मुमताज की कब्र
और
यह रहा
एक बादशाह का जनून
जिसने
हम से सरीखे
ग़रीबों की
मोहब्बत का
उड़ाया है मज़ाक
क्योंकि
वह घर
वह दरवाज़ा
वह बैठक
सिर्फ
मेरी आंखों से
दूर नहीं हो पाते हैं
जैसे
एक गरीब के ताजमहल
उसकी आंखों में बनते हैं
और
वही
टूट जाते हैं
दुनियां की नजरों में
कभी नहीं
आ पाते हैं।

अभिलाषा

हे ईश्वर
तूने मुझे इतनी लम्बी आयु दी
जिसमें मैंने कितने ही दुष्कर्म किए
उन सबका लेखा-जोखा
तेरे सम्मुख है
तू ने फिर भी मुझे कोई सजा न दी
हमेशा भला चंगा ही रखा
अब
तुझसे एक प्रार्थना है
कि
पूर्व इसके
मेरे हाथ-पांव निष्क्रिय हो जाएँ
जिह्वा अपना स्वाद खो दे
मुख से बोल न निकले
और आँखें भी
अपनी ज्योति मंद कर दें
तू
मुझे
इस संसार से उठा लेना
भला चंगा ही उठा लेना
मैं,
अपाहिज होकर मरना नहीं चाहता !

सफलता की कुंजी

तुम दिग्भ्रमित हो
सीढ़ियां नहीं चढ़ पाओगे
लिफ़्ट ले लो
ऊपर पहुँच जाओगे
ऊँचाई
आसमान छू रही है
ऐसे में
अपना पुरुषार्थ
कुछ अर्थ नहीं रखता
आल्हा गाओ
सर्वत्र पूजे जाओगे।

आज का शहर

शोर
शोर
शोर

चारों तरफ़
शोर ही शोर

पर्यावरण दूषित
प्रकृति खिन्न
मानव का जंगल

ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं पर चढ़ते मकान
पशु-पक्षियों के कलरव से भी बदत्तर

यह है आज का शहर
सभ्यता का श्मशान !

मसीहा

आज
और
एक दिन चला गया

दिन, सप्ताह, मास, वर्ष
इस तरह बीत गये
और एक दिन चला गया।

घुटन कर्म निष्क्रियता का
बोझ लादे यह हृदय
कुछ नहीं कर सका
और एक दिन चला गया।

पाप पुण्य मिथ्या सत्य
घेरे रहे रात दिन
इन पर न कुछ वस चला
और एक दिन चला ग ग।

बिम्ब तो बने बहुत
पर टूट सारे ही गये
लक्ष्य भी मिला नही
और एक दिन चला गया।

प्रकृति तो जड़ रही
गम अगम की विधा
चीन्ह मन न सका
और एक दिन चला गया ।

जो नहीं पहुंच में था
वह भी जब मिल गया
सुख दु.ख तब कहां
और एक दिन चला गया ।

साध मन की यह न थी
मसीहा बन मैं जिऊँ
बेख़बर बना दिया
और एक दिन चला गया ।

इत्यादि

(प्रेम, हास्य-व्यंग्य, गज़ल, गीत)



मैंने अपने इस जीवन में
जाने कितनों से प्यार किया

जिसने जितना चाहा मुझको
उसको उतना सत्कार दिया

कुछ लोग मुझे न समझ सके
कुछ ने मुझ पर व्यंग्य कसे
कुछ से लाखों अभियोग लगे
और वह भी मुझसे दूर रहे

पर सच क्या है
दोस्त तुम्हें मैं
मन की बात
सही
बतलाऊं
चाह प्यार की है
कितनी गहरी
ले उसकी थाह मैं कैसे पाऊं

इसलिए

व्यक्ति-व्यक्ति में
ठौर-ठौर पर
खोजूं
और
हल
खोज न पाऊं

जीवन का तब
भ्रम बन गया
लोग न मुझ को समझ सके
जिसके जो मन में आया
कह डाला
अभियोग लगे

लेकिन

सच तो यह है
प्यार न कोई कर पाया है
इतना
कि
यह सृष्टि रुके
और
न आगे कोई प्यार करे !

वह दिन कितने अच्छे थे

वह दिन कितने अच्छे थे
जब रात न अपनी होती थी
और दिन भी छोटे लगते थे
वह दिन कितने अच्छे थे।

साथ तुम्हारा होता था
और हम हंसते-हंसते मिलते थे।

परिचित से मिल जाने की
आशंका घेरे रहती थी
पर लेकर ख़तरे मोल सभी हम
अपने मन की करते थे
वह दिन कितने अच्छे थे।

पग-पग पर पहरे रहते थे
मित्र-मंडली हंसती थी
तरह-तरह से हमें सता कर
रोज नई फब्ती कसती थी
लेकिन धता बताकर उनको
लुका-छिपी हम करते रहते थे
वह दिन कितने अच्छे थे।

कभी सुबह और कभी शाम को
बादल भी घिर आते थे
दादुर, मोर, पपीहे भी
पी-पी टेर लगाते थे
मिलन-बिन्दु पर फिर भी हम
स्वयं पहुंच ही जाते थे
वह दिन कितने अच्छे थे।

बड़ी बड़े बातें अब कर लें
बड़े-बड़े अब महल बना लें
लेकिन जो दिन चले गये हैं
उनको कैसे वापस पा लें
आती है जब याद तो लगता है
वह दिन कितने अच्छे थे।

घर की खिड़की से

मैं
जब
अपने घर की खिड़की से
आपको
अपने 'लॉन' में
अपनी छोटी बहन को
लाड़ प्यार करते
और कभी
उसके गालों पर
तमाचे लगाते
देखता हूँ
तो सोचने लगता हूँ
काश
मैं आपके पास होता तो क्या करता !

मैं
जब
अपने घर की खिड़की से
सवेरे-सवेरे
आपको अपने बिस्तर से उठते
और खड़े होकर
अंगड़ाई लेते देखता हूँ
तो सोचने लगता हूँ
काश
मैं आपके पास होता तो क्या करता !

मैं
जब
अपने घर की खिड़की से
आपको
अपने कुत्ते के संग
दौड़ते-फांदते
और कभी
उसको गोद में बिठा कर
चूमते देखता हूँ
तो सोचने लगता हूं
काश
मैं आपके पास होता तो क्या करता !

मैं
जब
अपने घर की खिड़की से
आपको
किसी ठहरी हुई शाम में
अपने नौजवान नौकर के संग
हंसते
और मीठी-मीठी बातें करते
देखता हूं
तो सोचने लगता हूं
काश
मैं आपके पास होता तो क्या करता !

तुम जैसी भी हो वहुत खूवसूरत हो

तुम जैसी भी हो
वहुत खूबसूरत हो
सचमुच तुम वहुत खूबसूरत हो !

तुम्हारी आंखों में
झील है या दरिया
तुम्हारी भँवों में
प्यार है या सम्मोहन
तुम्हारे ओठों की लाली
कहती सी लगती है
कि तुम तपिश से जल रही हो
किसी से छू नहीं गई हो
तुम धूप भी नहीं हो
तुम चांदनी भी नहीं हो
तुम ठगी सी खड़ी हो
तुम कौन हो
तुम जैसी भी हो
वहुत खबसूरत हो !

मुसाफ़िर की मंज़िल

गाड़ी चल रही है
ठसाठस भरी हुई है
मुसाफ़िर को सीट मिल गई है
वह उसमें अट गया है
नदी नाले पेड़-पौधे
झोपड़ी और मकान
सब चल रहे हैं
गाड़ी चल रही है

मुसाफ़िर
अपनी मंज़िल की तरफ बढ़ रहा है!

गाड़ी चल रही है
शरीर हिल रहे हैं
स्पर्श मिल रहे हैं
कोई किसी से बोल नहीं रहा है
रात आधी से अधिक बीत गई है
मुसाफ़िर अपनी मंज़िल पर
आँख गड़ाये हुए है
गाड़ी की गति
उसे धीमी लग रही है
उसकी मंज़िल उससे दूर नहीं है
रफ़्तार और तेज हो जाए
ऐसी उसकी साध बन रही है
गाड़ी चल रही है
गाड़ी चल रही है!

एक रोग

भन्नाया चेहरा
झगड़ते बाल
और यह सलवटें
बता रही हैं
कि
सारी रात
तुमने करवटें बदलते ही
बिताई है
रोग ही कुछ ऐसा है
जिसका इलाज
दवा-दारू नहीं
मन की शान्ति से है
जो तुम्हें
पलंग पर लिटा तो देती है
लेकिन
सुला नहीं पाती है !

तुम न जाने क्यों इतना याद आती हो

तुम
न जाने क्यों
इतनी याद आती हो
कि
सोते-जागते
उठते-बैठते
हर समय
परेशान कर जाती हो
ऐसी भी तो बात नहीं है
कि तुम बहुत खूबसूरत हो
और तुम्हारी खूबसूरती पर
कोई भी फिदा हो सकता है
तुम तो
मुझसे
बहुत छोटी हो
तुमको डांटना-फटकारना
बहुत अच्छा लगता है
यह जानते हुए कि तुम पर
अपना कोई अधिकार नहीं है
तुम्हारी किसी भी चाही
अनचाही इच्छा की उपेक्षा कर
जो जी में आया तुमसे कह देने से
मन बहुत हलका-हल्का लगता है

तुम्हारे
वह सब सुन लेने से
और
कभी कुछ
यूं ही
आँखों-आँखों में कह देने से
ऐसा लगता है
तुम छोटी नहीं
अपनी उम्र से बहुत बड़ी हो
और

जितनी ज़मीन के ऊपर हो
उससे कहीं ज्यादा
ज़मीन के नीचे खड़ी हो।

तेरी याद मुझको सताने लगी है

हवाओं में ठंडक-सी आने लगी है
तेरी याद मुझको सताने लगी है

बरसती हुई बूंद को जैसे पकड़ा
तस्वीर तेरी मुस्कराने लगी है

पहाड़ी पें चढ़ के घाटी में उतर के
सांसों की हरकत पसीने से टपटप

सुध तेरी मुझको तिलमिलाने लगी है

हरी दूब पर
चांदनी से नहाती
पहाड़ी की मस्ती
कोयल की कू-कू
पपीहे की पी-पी
सूरज की तपन
बारिश की रिमझिम
मौसम की गुमसुम
छटा देखकर

तबियत बहुत अलसाने लगी है।
तेरी याद मुझको सताने लगी है॥

यह दफ्तर है

हाज़िरी

अफ़सर
दफ़्तर आये न आये
वह
दफ़्तर में हमेशा हाज़िर है।
हाज़िरी रजिस्टर में
उसका नाम न लिखा जाए
यह उसकी अफ़सरी है।
चपरासी
मातहतों का हाजरी रजिस्टर
अफ़सर की मेज पर
दस बज कर दस मिनट पर पहुंचाये
यह समय की पाबन्दी
और 'पंक्चुएलिटी' है!

रिश्वत

मातहत
बाहर के व्यक्ति से
चाय का प्याला पी ले
तो रिश्वत है
मगर
बाहर के व्यक्ति से
अफ़सर को मिला 'लंच'
'पब्लिक-रिलेशन' है!

फ़ाइलों का ढेर

अफ़सर की मेज़ पर
फाईलों का ढेर
देश का गंभीर मसला है
लेकिन मातहत के लिए
उसकी
दफ़्तर की ज़िन्दगी का
असली खतरा है!

महराबियां

(1) जिन्दगी

रंगीनियां और फ़लसफे
मुद्दत हुई सब छुट गये
अब तो कोरे कागज़ों में
जिन्दगी पलने लगी है।

(2) अख़बार

गुलशन नन्दा को पढ़े
या पढ़ूँ अख़बार को
झूठ से लिपटी कहानी ही
भरी अख़बार में है।

(3) ख़्याल

वह बात तब न होती
हो जाती तब हक़ीकत
तुम भी अगर पहुँचते
तो बात और होती।

(4) सच्चाई

अब आ गये हो ऐसे
तो यह भी सुनते जाओ
मेरी दास्तां के संग में
उनकी दासतां भी होती।

चक्कर दूध मलाई का

नौबत
जब पिटने की आई
तो सठियाई
हड्डियों ने
बेटों को
एक चाल सुझाई :
'कर दो मना
हम नहीं लड़ेंगे इलैकशन'
'ताऊ' बन जाए
फिर एक बार 'डिप्टी प्रीमियर'
तब देखेंगे
कैसी जनता
कैसा 'प्राइम मिनिस्टर'
पूरा ख़ानदान
नाचेगा
डट के उड़ाएगा
दूध मलाई
नौबत
जब पिटने की आई !

सही नुस्खा

रक्त चाप बढ़ जाएगा
नमक मत खाईए
'डाईब्टीज' हो जाएगी
'शुगर' छोड़ते जाईए

'टैन्शन' 'ब्रेन हैमरेज' की निशानी है
बेकार गप्प लड़ाईए
हंसिये और हंसाईए
परेशानी दूर हो जाएगी

पीने के नाम पर
ख़ालिस पानी पीजिये
'लिकर' नही मिलाइये
मज़ा असली का दे जायेगी

तन्दुरुस्ती लाख नियामत है
बस धूप और हवा खाईए
खुद समझिये और दूसरों को समझाइये

इस नुस्खे की कोई कीमत नही
एक बार अमल कीजिए और लाख सुख पाइए

न डाक्टर की जरूरत
न मर्ज हो लाइलाज
मस्त हो के जिन्दगी
इस तरह बिताइए !

ग़ज़ल-1

इतने करीब आके क्यों चल पड़े सनम।
न सांझ ढली न रात हुई ले ली है क्या कसम।।

बेपरदगी राज नही मुँह खोल कर कहें।
हीले-हवाले देने से न भर पायेंगे जख़्म।।

अपनी तो जिन्दगी का दस्तूर यह रहा।
जो भी खुशी से आ मिला हम मिल लिये सनम।।

ों को यह शुब्हा हुआ कितनों ने यह सवाल किये।
भी क्या पा लिया (जो) पूछा नहीं उसका ख़ुदा उसका धरम।।

हम उनको क्या जवाब दें हम उनको क्या बतायें अब।
गुमराह वह मंजिल से है समझ पायेंगे वह क्या मरम।।

हम को साथ मिल गया हम हो लिये थे साथ।
क्या करते उनसे पूछ कर उनका ख़ुदा उनका धरम।।

इस पर भी अगर कूच की तैयारी हो जनाब।
आप चले जाइये भर जायेंगे सारे जख़्म।।

गज़ल-2

मुझे रात दिन मत ऐसे सताओ।
कि जब जी करे तो दूर चले जाओ॥

तुम्हारे बिना वह फ़ुरकत भली थी।
कि हम जी रहे थे तुम आओ न आओ॥

परेशानियां और सितम सबके अपने।
न पूछो उन्हें तुम न हमें तुम बताओ॥

बहुत से करम कर चुके तुम जहान् में।
एक छोटा करम और करते ही जाओ॥

मिलन की जो रातें काटी थीं संग में।
उन रातों की यादों को लेते ही जाओ॥

चाह पूरी भी न हो और जिन्दगी भी रहे।
मालिक की मर्ज़ी है तुम जाओ तो जाओ॥

गज़ल-3

आयें वह मेरे यहां यह मुझे मंजूर नहीं।
देखा करूं दिन-रात उन्हें यह मेरा दस्तूर नहीं ॥

जो गया दो-चार घड़ी को मैं फ़सीलों पै।
वह खड़े झांका करें यह मुझे मंजूर नहीं ॥

क्या हुआ वह जो अगर दो-चार घड़ी को बोले।
बाकी घड़ियां मेरी सूनी बीते यह मुझे मंजूर नहीं ॥

चाह ऐसी भी तो हो कि दूरी भी रहे।
सब्र का जाम पिऊं इतना तो शऊर नहीं ॥

मुझे रात सारी नहीं नींद आई

मुझे रात सारी
नहीं नींद आई
तुम भी न आये
वह भी न आई।

निशा कुछ सहमती
दिशा कुछ गहम सी
हवा डोलती सी
कई बार आई

मगर तुम न आये
न नींद मुझको आई।

चांद ने झुरमुटों से
कई बार झांका
तारों ने ऐसा समां
कुछ था बांधा

कि जैसे बारात चलकर
बहुत दूर आई
न तुम पास आये
न वह पास आई।

गज़ल-4

मेरा मुक़ाम है कहीं मुझको पता नहीं।
मैं चल पड़ा हूं किसलिये मुझको पता नहीं॥

दौलत और प्यार सब यहां बेकायदे तक़सीम हैं।
इन पर गुमान किस कदर मुझको पता नहीं॥

मेरी तो कम जरूरतें ऐसे ही पूरी हो गईं।
मैं किसलिये झुकाऊं सर मुझको पता नहीं॥

गर्दिश की ठोकरें तो खाई हैं दरबदर।
उनका हिसाब अब करूं मुझको पता नहीं॥

चाहे करम वह और करे या करे नहीं।
मेरा तो चलना जारी है उसका पता नहीं॥

मुझे रात सारी नहीं नींद आई

मुझे रात सारी
नहीं नींद आई
तुम भी न आये
वह भी न आई।

निशा कुछ सहमती
दिशा कुछ गहम सी
हवा डोलती सी
कई बार आई

मगर तुम न आये
न नींद मुझको आई।

चांद ने झुरमुटों से
कई बार झांका
तारों ने ऐसा समां
कुछ था बांधा

कि जैसे बारात चलकर
बहुत दूर आई
न तुम पास आये
न वह पास आई।

जुगनुओं की चमक से
धरा जगमगाई
इधर सेज ख़ाली
उधर सेज ख़ाली

पाहुनों को बरजती
आंख भी मिचमिचाई
तब,
शहनाई पर यह धुन दी सुनाई
अभी रात आई अभी रात आई।

मुझे रात सारी नहीं नींद आई
तुम भी न आये वह भी न आई।।

शीघ्र प्रकाशित :

बटंवारे की कहानी	—(पद्य)
राजा बेतो	—(पद्य)
एक दफ़्तर	—उपन्यास
Generations On The Run	—short stories.
Poems By Day & Night	—Poetry book

ISBN 81-85207-02-X